डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

बीए प्रथम वर्ष हिंदी प्रतिष्ठा

द्वितीय प्रश्नपत्र

प्राचीन और मध्यकालीन काव्य

कबीर के दोहे – सप्रसंग व्याख्या

1.सतगुरु सवाँन को सगा, सोधि सईं न दाति।

हरिजी सवाँन को हितू हरिजन सईं न जाति।।

संदर्भ – प्रस्तुत साखी अयोध्या सिंह उपाध्याय द्वारा संपादित 'कबीर वचनावली' के नाम, परिचय और प्रेम के अंतर्गत गुरु को अंग से उदधृत है।

प्रसंग – गुरु को अंग के अंतर्गत जो साखियाँ हैं वे गुरु को समर्पित हैं। प्रस्तुत साखी में भी गुरु के प्रति कृतज्ञता के भाव को व्यक्त किया गया है। कबीर ने गुरु संबंधी साखियों में गुरु के प्रति, आदर – सम्मान, कृतज्ञता की अभिव्यक्ति की है। गुरु के बिना जीवन में अज्ञानता का अंधकार फैला रहता है।

व्याख्या –

प्रस्तुत साखी में कबीर कहते हैं कि इस सम्पूर्ण संसार में सद्गुरु के समान अपना कोई निकट संबंधी नहीं है। गुरु से ज्यादा अपना कोई भी नहीं है। साधु के समान कोई दाता नहीं है। साधु सदैव ज्ञान की तलाश में लगे रहते हैं। प्रभु की खोज करते हैं, तत्वों का शोधन करते हैं। इतने परिश्रम से खोजे गए ज्ञान को अपने शिष्य को दे देते हैं, इसीलिए उनसे बड़ा दाता कोई भी नहीं है। दयालु प्रभु के समान हमारा हितैषी दूसरा कोई भी नहीं है। प्रभु भक्तों के समान दूसरी कोई जाति या समूह नहीं है। प्रभु भक्तों का समूह सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों का समूह है।

विशेष –

भाव पक्ष –

1.गुरु की महिमा का वर्णन है।

2. भक्ति – भावना की प्रधानता है।

3. गुरु, साधु, प्रभु और प्रभुभक्त सबके प्रति आदर भाव का चित्रण है।

शिल्प पक्ष –

1.अनुप्रास अलंकार है।

2.दोहा छंद है।

3. शांत रस है।

2. बलिहारी गुरु आप आपनें दयों हाड़ी कै बार।

जानि मानिष तैं देवता करत न लागी बार।।

संदर्भ – प्रस्तुत साखी अयोध्या सिंह उपाध्याय द्वारा संपादित 'कबीर वचनावली' के नाम, परिचय और प्रेम के अंतर्गत गुरु को अंग से उदधृत है।

प्रसंग – गुरु को अंग के अंतर्गत जो साखियाँ हैं वे गुरु को समर्पित हैं। प्रस्तुत साखी में भी गुरु के प्रति कृतज्ञता के भाव को व्यक्त किया गया है। कबीर ने गुरु संबंधी साखियों में गुरु के प्रति, आदर – सम्मान, कृतज्ञता की अभिव्यक्ति की है। गुरु के बिना जीवन में अज्ञानता का अंधकार फैला रहता है।

व्याख्या –

प्रस्तुत साखी में कबीर कहते हैं कि मैं स्वयं को अपने गुरु पर बार – बार न्यौछावर करता हूँ। मैं उन पर बलि – बलि जाता हूँ। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, ऐसे गुरु जिन्होंने बस कुछ ही क्षणों में मुझे मनुष्य से देवता बना दिया। मेरे अवगुणों को दूर कर मुझे सद्गुणों से सम्पन्न कर दिया। मानवीय दुर्बलताओं से ऊपर उठाकर मुझे दिव्यगुणों से युक्त कर दिया। अपने ऐसे गुरु पर में बार – बार बलिहारी जाता हूँ।

विशेष –

भावपक्ष –

1.गुरु के प्रति अनन्य भक्ति – भावना प्रकट की गई है।

2. गुरु के प्रति कृतज्ञता भाव व्यक्त हुआ है।

शिल्प पक्ष –

1. अनुप्रास अलंकार
2. बार में यमक अलंकार
3. छंद – दोहा
4. रस - शांत